बुंदेली लोक साहित्य में संस्कृति एवं समाजः एक अनुशीलन

शोधार्थी दीपिका शर्मा
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

बुंदेलखंड भारतीय लोक संस्कृति का अक्षय स्रोत है। बुंदेली लोक साहित्य में बुंदेलखंड की लोकसंस्कृति एवं सामाजिक जनजीवन का प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखाई पड़ता है। ''बुंदेलखंड में यहाँ की लोक सांस्कृतिक परंपराओं का अनोखा खजाना बिखरा पड़ा है। यहाँ की लोक संस्कृति में विद्यमान आचार–विचार, रीति–रिवाज, धर्म–अध्यात्म एवं उपासना के जो रूप देखने को मिलते हैं, वे अद्वितीय है। बुंदेलखंड की लोकभूमि पर पूरे वर्ष सांस्कृतिक मेलों और उत्सवों का आयोजन होता रहता है। यहाँ के हर उत्सव और पर्व–त्यौहार अपनी मौलिक और ऐतिहासिक महत्ता के कारण विशिष्ट है। समय, ऋतु और आवश्यकताओं के अनुकूल इस लोकभूमि के तीज–त्यौहार और लोक–पर्व आज भी बुंदेली समाज में अपनी गहरी जड़े जमाये हुए हैं। बुंदेली साहित्य ही बुंदेली संस्कृति का सजग संकल्पधर्मी शिल्पकार है। जो लोकजीवन के प्रत्येक क्षेत्र की क्रियाओं को विशिष्ट ढंग से संचालित करता है। यहाँ की लोक–समृद्धि का आधार भी यहाँ की लोक–संस्कृति है।''[i]

बुंदेलखंड की लोकसंस्कृति की छाया में यहाँ का समूचा बुंदेली समाज पल्लवित–पुष्पित एवं विकसित हुआ है। पुरातन काल से ही बुंदेली समाज इस संस्कृति की कोख में पलकर पीढ़ी दर पीढ़ी फलता–फूलता रहा है। व्यक्ति, परिवार और समाज से ही राष्ट्र बनता है तथा लोक मानस में रची बसी संस्कृति और साहित्य ही किसी राष्ट्र की प्रतिष्ठा और पहचान का प्रतीक होता है।

लोकसाहित्य में ही लोकसंस्कृति का वास्तविक इतिहास एवं चित्रण मिलता है। उदाहरण के लिये बुंदेलखंड में कारस देव, धर्मा, और सावरी आदि लोक गाथाओं में इस क्षेत्र के चरवाहों की संस्कृति का चित्रण मिलता है। बिलवारी, पारस, वर्षा, अकाल आदि कृषिपरक लोकगीतों में किसानी संस्कृति का श्रमपरक वर्णन मिलता है। बुंदेली लोकगीत एवं लोकगाथाएँ चक्की या जतसार से लेकर भिक्षुको तक के संगीतमय गीत श्रमिक संस्कृति को उजागर करते हैं। इन लोकगीतों में एक ओर यदि कर्मठता एवं नैतिकता है तो दूसरी ओर निर्धनता की व्यथा और सामंती शोषण की कथा का चित्रण मिलता है। ''बुंदेली गीतों में बुंदेली संस्कृ ति के पुराने रीति–रिवाज, संस्कार, क्रियाकलाप, गतिविधियाँ, पारस्परिक संबंध, रूढ़ियाँ, लोकविश्वास और करूणामयी भावुकता, उल्लास, आस्था, सामाजिक परिवर्तन तथा जीवन मूल्यों का क्षरण और नये मूल्यों का विकास स्पष्ट परिलक्षित होता है।''[ii]

बुंदेली साहित्य में चित्रित बुंदेली लोकसंस्कृति मानवीयता का अनुपम दस्तावेज है। ''लोकजीवन के सांस्कृतिक पहलू में लोकगीत, लोकसंगीत, लोकवाद्य, लोकनृत्य, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, लोक–मुहावरे, लोक–कहावतें, लोक–पहेलियाँ, लोक पर्व–उत्सव, लोक रीति–रिवाज, लोक व्रत–पूजन, लोक देवी–देवता, ग्राम देवी–देवता, लोक अनुष्ठान, लोकउत्सव, लोकरंग, लोकनाट्य एवं लोक शिल्प मेला आदि का समावेश है।''[iii]

''बुंदेली साहित्य–संस्कृति का अनुशीलन किया जाय तो हम देखते हैं कि बुंदेलखंड का जीवन सामान्यतः कृषि पर ही आधारित है। यहाँ तक कि बुंदेलखंड की शहरी संस्कृति पर भी किसान संस्कृति की झलक साफ दिखाई देती है। ''रूढ़िवादी बाहरी आडंबरों की प्रधानता होते हुए भी सांस्कृतिक दृष्टि से बुंदेलखंड अत्यंत समृद्धि एवं संपन्न है। एक ओर अनेक परंपराएँ यहाँ के लोकजीवन को आदर्शों में बांधती है, तो दूसरी ओर कठिन श्रम को जीवन का आधार भी बनती है। अपनी आन–बान को निभाने के लिये बुंदेली अपना सर्वस्व न्यौछावर करने से पीछे नहीं हटते।''[iv]

''बुंदेलखंड के लोक समाज ने अपनी भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सीमाओं में रहते हुए अपनी आवश्यकताओं के अनुसार अपनी संस्कृति को संजोया, संवारा

एवं समृद्ध किया है। यही सहज वृत्ति इस संस्कृति के विशिष्ट, मुखर और सशक्त बनाती है।''[v]

''बुंदेली संस्कृति जागृत जनता की प्रतीक है जिस पर गाँवों, खेतों, खलिहानों और श्रमिक जीवन की छाप है तो वही शि ट–शहरी सभ्यता का प्रभाव भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इस संस्कृति में जन्मभूमि के गौरवपूर्ण इतिहास की आभा और यशस्वी वीरों की गाथाओं की पुकार भी है। बुंदेलखंड मध्यप्रदेश की लोक संस्कृति का एक गर्वयुक्त अध्याय है। यहाँ के गीत, संगीत, शिल्प आदि सभी कला–कौशल बुंदेली माटी से जुड़े हुए हैं।''[vi] यही कारण है कि यहाँ की संस्कृति का रंग ही अलग है। बुंदेली संस्कृति जन सामान्य के सामूहिक प्रतिभा समुच्चय की प्रतीक है। अतीत पर श्रद्धा रखते हुए भविष्य की रचनात्मक कल्पना ही बुंदेली संस्कृति का पर्याय है।

बुंदेलखंड की संस्कृति अत्यंत प्राचीन है। यहाँ की लोक परंपराओं एवं रीति–नीतियों के अनुशीलन से पता चलता है कि ये संस्कृति वैदिक जीवन से भी प्रभावित रही है और यह लौकिक संस्कृति विज्ञान सम्मत भी है। ''बुंदेलखंडी साहित्य एवं संस्कृति के रीति–रिवाज, पर्व, त्यौहार, संस्कार, लोकाचार एवं दैनिकचर्या के अनेक कार्य जिस वैज्ञानिकता का संदेश देते हैं। उससे प्रमाणित होता है कि इस अंचल के लोक मनीषियों ने सामान्य जीवन शैली को विज्ञान सम्मत एवं पर्यावरण बोधक बनाने का महनीय प्रयास किया था। जीवन शैली का लोक व्यापीकरण इस कलात्मकता के साथ किया गया कि इसमें वैज्ञानिकता का सहज प्रवेश हो गया। उस जीवन शैली ने पीढ़ी दर पीढ़ी चलकर परंपरा का स्वरूप ग्रहण कर लिया।''[vii]

घर का कोई अनपढ़, बालक–बालिका या महिला–पुरुष अपने दैनिक कार्यों को यह सोचकर कभी नहीं करते कि वे कोई विज्ञान सम्मत आचरण करने जा रहे हैं, वे तो मात्र इसलिये ऐसा करते हैं, क्योंकि उनके घर–परिवार तथा समाज के लोग परंपरागत रूप से लोक–रीति अनुसार वैसा करते आये हैं। लोक परंपरा का अविरल प्रवाह विज्ञान की संजीवनी से बुंदेली लोक जीवन को अभिसिंचित करता आया है।

''आज मूल्यों के क्षरण और विघटन का दौर है, भोगवादी संस्कृति का बोलबाला है, ऐसे कठिन समय में हमारी यह धरोहर दाँव पर लगी है। एक बड़ी चुनौती संस्कृति और

मानवीय इसके मानवीय मूल्यों को बचाने की है। आज लोक–जीवन की खंडित आस्थाओं और विघटित मूल्यों की रक्षा करने के लिये 'लोक' के मंगल और लोक जीवन में सह–अस्तित्व के मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा आवश्यक है। साहित्य, संस्कृति और लोक जीवन के उन्नयन हेतु आज 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के मंत्र को अपनाने की आवश्यकता है।''[viii]

संदर्भ संकेत

[i] लोकमंगल स्मारिका 'देसज' 2011, डॉ. कुमुद, उरई, जालौन पृष्ठ 19

[ii] लोक रंजनी, परशुराम विरही, पृष्ठ 31

[iii] हमारा बुंदेलखंड, सरोज गुप्ता, पृष्ठ 17

[iv] चौमासा, संपादक डॉक्टर कपिल तिवारी, लोक साहित्य, अंक फरवरी 1995, पृष्ठ 44

[v] बुंदेली साहित्य का इतिहास, डॉ. आरती दुबे, 2011, साहित्य अकादमी भोपाल, पृष्ठ 49

[vi] उरैन, डॉ. कामिनी, आराधना ब्रदर्स, कानपुर 2014, पृष्ठ 46

[vii] संस्कृति के दूत, डॉ. परशुराम विरही, पृष्ठ 23

[viii] लोकमंगल पत्रिका, ग्वालियर, जनवरी मार्च 2009, संपादक डॉ. भगवान स्वरूप चैतन्य, पृष्ठ 03

Contributors Details:

शोधार्थी दीपिका शर्मा

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर